रिकार्ड:- धारणा पर मनुवा... ओम शान्ति प्रातःक्लास 14-5-67

स्वर्ग-2 बच्चों को यही फरमाया जाता है। और बच्चे जानते है कि दिल होती है कि जल्दी ही सतयुग आ जावे और इस दुःख से छूट जावें। परन्तु ड्रामा बहुत धीरे-2 चलने वाला है। बाकी थोडे ही रोज है। बडों-2 दवारा भी आवाज़ सुनते रहेंगे कि अब दुनियाँ बदलनी है। जो भी बडे-2 पोप जैसे है वो भी कहते है कि दुनियाँ बदलने वाली है। अच्छा तो पिर पीस कैसे होगी आपस मे खण्ड खीर कैसे होगें। बच्चे जानते है कि सतयुग मे खण्ड खीर हो जाते है। इस समय लूण पानी है। अभी हम खण्ड खीर हो रहे है। उस तरफ दिन प्रति दिन लूण पानी होते जाते है। आपस मे लड़ झगड़ कर खत्म होना है। तैयारियाँ हो रही है। यह ड्रामा का चक्र अब पुरा होता है। पुरानी दुनियाँ पुरी होती है। नई दुनियाँ की स्थापना हो रही है। नई दुनियाँ सो पुरानी पुरानी सो फिर नई बनेगी। इसको ही दुनियाँ का चक्र कहा जाता है जो कि फिरता ही रहता है। ऐसे नही कि लाखो वर्ष के बाद पुरानी दुनियाँ नई होगी। नही। नही तुम बच्चे अच्छी रीती जान सकते हो। भक्ति बिलकुल ही अलग है। भक्ति का सम्बन्ध रावण के साथ है। ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है। यह तुम अभी समझ रहे हो। अभी बाप को बुलाते है कि हे पतित पावन आओ। आ कर नई दुनियाँ की स्थापना करो। नई दुनियाँ मे तो जरूर सुख ही होता है। अभी बच्चे छोटे अथवा बडे सब जान गये है कि अभी हमको घर वापस जाना है। यह नाटक पुरा होता है। हम फिर से अब सतयुग मे जावेंगे 84 जन्मों का चक्र पुरा लगाना है। सो आत्मा का दर्शन होता है भृकुटी चक्र का। अर्थात आत्मा को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। इसको ही कहा जाता है त्रिनेत्री। अभी तुम त्रिनेत्री हो। और सब मनुष्यों को यही दो नेत्र है। ज्ञान का नेत्र कोई को नही है। त्रिनेत्री को तब त्रिकाल दर्शी कहे। क्योंकि आत्मा को ज्ञान मिलता है नां। आत्मा ही एक शरीर छोड़ कर दुसरा लेती है। संस्कार आत्मा मे ही रहते है। आत्मा अविनाशी है। अब बाप कहते है कि नाम रूप से न्यारा बनो। अपने को अशरीरी समझो। देह नही समझो। यह भी जानते हो कि हम आधा कल्प से बाप को याद करते आये हो। उसमें भी जब जास्ती दुःखी होते है जब जास्ती याद करते है। अभी कितना दुःख है। आगे इतना दुःख नही था। जब से बाहर वाले आये है तब से ही यह राजाये लोग लडे है जुदाई हुई है। सतयुग मे तो एक ही राज्य था। अभी तुम कलियुग से लेकर सतयुग तक की हिस्ट्री समझ रहे हो। सतयुग त्रेता मे एक ही राज्य था। ऐसी एक ही डायेनेस्टी कोई की होती नही है। क्रिश्चनस मे से भी देखो कितनी फूट है। वहाँ पर तो सारा विश्व एक के ही हाथ मे रहता है। वो सिर्फ सत, त्रेता मे ही होता है। अभी बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी तुम्हारी बुधी मे है। और कोई सत्संग मे हिस्ट्री जाग्राफी शब्द नही सुनेंगे। वहाँ पर तो रामायण महाभारत आद ही सुनाते है। यहाँ पर तो वो बाते नही है। यहाँ है वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी। तुम्हारी बुधी मे है कि ऊंच ते ऊंच हमारा बाप है। बाप का सितारा है नां। एक आत्माओं का झाड़। दुसरा है मनुष्यों का झाड़। मनुष्यों के झाड़ मे ऊपर मे कौन है? ग्रेट-2 ग्रैंड फादर ब्रह्मा को ही कहेंगे। यह जानते हो कि ब्रह्मा ही मुख्य है। परन्तु ब्रह्मा के पीछे क्या हिस्ट्री जाग्राफी है यह कोई नही जानते है। अब तुम्हारी बुधी मे है कि ऊंच ते ऊंच बाप रहते भी है परमधाम मे। फिर सूक्ष्म वतन का भी तुमको मालूम है। मनुष्य ही फिर फरिश्ते बनते है। इसलिये ही सूक्ष्म वतन दिखाया है। सूक्ष्म वतन का तो नाम निशान भी तुम अभी ही सुनते हो। तुम आत्माये जानती हो। शरीर तो सूक्ष्म वतन मे नही जावेगा। जाते कैसे है उनको कहा जाता है तीसरा नेत्र। दिव्य दृष्टि अथवा ध्यान भी कहते है। तुम ध्यान मे तो ब्र, वि, शं भी देखते हो। बाबा ने समझाया है कि शंकर का कोई तालुक नही है। उन पर तो कोई काम ही नही है। वो लोग तो दिखाते है कि शंकर के आंखो को खोलने से विनाश हो जाता है। अब इससे तो कोई समझ नही सकते। अब तुम जानते हो कि विनाश का समय हो गया है तब ही कहा जाता है कि शंकर दवारा विनाश। बस। बाकी उनको मतिवा वा महिमा

मतिवा वो महिमा आद कुछ भी नही है। विनाश तो ड्रामा अनुसार होना ही है। आपस मे लड़ कर विनाश हो जायेगा। बाकी शंकर क्या करते है। यह तो ड्रामा अनुसार ही नाम रख दिया है। तब ही समझाना पड़ता है कि ब्र,वि,श तीनो है। स्थापना के लिये ब्रहमा को रख दिया। पालना के लिये विष्णु को। विनाश के लिये फिर शंकर को रख दिया है। यह तो बना-बनाया ड्रामा है। कल्प-2 समझते रहेंगे कि शंकर का पार्ट कुछ भी नही है। ब्रहमा और विष्णु का पार्ट तो सारे कल्प मे है। ब्रहमा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रहमा। 84जन्म ब्रहमा लेते है। विष्णु के लिये भी कहेंगे कि 84जन्म लेते है। ब्रहमा सो विष्णु वनेंगी। ऐसे ही कहेंगे नां। ब्रहमा के भी पुरे 84जन्म हुये तो विष्णु के भी पुरे हुये। शंकर तो जन्म मरण ही से न्यारा है। इसलिये ही शिव और शंकर को मिला दिया है। वास्तव मे शिव का तो बहुत पार्ट
** ******* * **********
है। पढ़ाते है, शंकर क्या करते है। उनका पार्ट तो ऐसा धत्तूर फुल कह दिया है जो कि तुम तो विश्वास भी नां करो। सूक्ष्म वतन मे फिर बैल पर शंकर स्वारी। फिर सांप गले मे। अब सूक्ष्म वतन मे बैल सांप आद तो होते नही है। शंकर कोई महत्त्व नही रखता है। परन्तु भक्ति मार्ग मे महत्त्व कर दिया है। क्योंकि शिव और शंकर को मिला दिया है। फिर कहते है कि भांग पीता था यह करता था। फिर ऐसे काम करने वाले को देवता थोड़ेही कहेंगे। कोई विश्वास ही नही करे। परन्तु कदर बुधी है नां। तुम भी ऐसे ही समझते हो। विनाश तो ड्रामा अनुसार होना ही है बाम्बस आद द्वारा। मनुष्य कह देते है कि यह प्रेरक है। बाप ने समझाया है प्रेरणा की बात कोई होती नही है। बाप को तो आना पड़ता है। प्रेरणा से थोड़ेई ड्रामा का राज समझावेंगे। प्रेरणा कह देते है। बाप ने समझाया है कि मेरे मे सृष्टी चक्र का ज्ञान है। मेरे को पार्ट मिला हुआ है। इसलिये मुझे ही ज्ञान सागर पतित पावन कहते है। नालेजफुल कहते है। नालेज किसको कहा जाता है वो तो जब मिले तब पता पड़े नां। मिला ही नही है तो फिर अर्थ का कैसे पता पडे। आगे तो तुम भी कहते थे नां कि ईश्वर प्रेरणा करते है। वो ही सब कुछ जानते है। हम जो भी पाप करते है वो ईश्वर देखते है। बाबा कहते है कि मै कुछ भी जानता नही हूं। यह धन्धा मै करता ही नही हूं। यह तो जो जैसा कर्म करते है उसकी खुद ही सजा भुगतते है। मै किसीको नां देखता हूं नां कोई को प्रेरणा से सजा देता हूं। मै प्रेरणा से करूं तो जैसे कि मैने ही सजा दी। कोई को कहा कि इनको मारो, यह भी दोष है। कहने वाला भी फंस पड़े। शंकर प्रेरणा देवे तो वो भी फंस जावे। किसने भडकाया कि तुम यह करो। तो दोनो ही फंस गये नां। बाप तो कहते है कि मै तो तुमको सुख देने वाला हूं। तुम मेरी महिमा करते हो कि आकर सुख दो। दुःख हरो। तो मै थोड़ेई दुःख देता हूं। झूठे कलंक तो ढेरे मेरे पर लगाते है। आजकल तो बहुत कलंक लगाते है। आगे तो कहते थे 24अवतार आद-2। अभी तो तुमसे भी जास्ती हमारे जन्म दिखा दिये है। ठिक्कर भित्तर कण-2 मे भगवान कह देते है। ऐसा एक नाटक भी बनाया है। अभी तुम बच्चे बाप के सम्मुख बैठे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिये। यहां तो डायरेक्ट सुनते हो। भासना लेते हो। जानते हो कि बाबा हमको पढ़ाते है। इसको ही मेला कहा जाता है। सेन्टर पर तुम जाते हो। वहां पर कोई आत्माओं परमात्मा का मेला नही कहेंगे। आत्मा और परमात्मा का मेला यहां लगता है। यह भी तुम जानते हो। मेला लगा हुआ है। बाप बच्चो के बीच मे आये है। आत्माये सब यहां है। आत्मा ही याद करती है कि बाप आवे। यह सब से अच्छा मेला है। बाप आकर सब आत्माओं को रावण राज्य से छुड़ा देते है। तो यह मेला अच्छा हुआ नां। जिससे ही मनुष्य पारस बुधी बनते है। उन मेले पर तो मनुष्य मैले हो जाते है। पैसे बरबाद करते रहते है। मिलता तो कुछ भी नही है। उसको
*** ************ ** **** ****
मायावी आसुरी मेला कहा जाता है। यह है ईश्वरिय मेला। रात दिन का फर्क है। तुम भर आसुरी मेले थे अब तुम ईश्वरिय मेले मे हो। तुम ही जानते हो कि बाबा आया हुआ है। सब जान जावे तो पता नही कितनी भीड़ हो जावे। इतने मकान आद रहने के लिये कहां से लावे? अभी भी कितना ख्याल रहता

खयाल रहता है। बच्चे वृधी को पाते रहते हैं। मकान बनाते जाते है। बहुत बच्चे आवेंगे। पिछाडीये गाते है नां अहो प्रभु तेरी लीला.... कौनसी लीला? यह है सबसे बडी लीला। पुरानी दुनियां खत्म होने से पहले नीं दुनियां की स्थापना होती है। इसलिये हमेशा किसीको भी समझाओ तो पहले स्थापना विनाश फिर पालना कहो। जब स्थापना पुरी हो तब फिर विनाश होता है। फिर पालना होगी। तो तुम बच्चों को खुशी रहती है कि हम स्वदर्शन चक्रधारी ब्राहमण हैं। फिर हम चक्रवर्ती राजा बनते है। यह कोई को भी पता नही है। उन देवताओं का राज्य कहां गया। नाम निशान क्यों गुम हो गया है। देवता के बदली अपने को हिन्दु कह देते है। हिन्द मे रहने वाले हिंदु और हिन्दुस्तानी है क्या? लन्दन को भी ऐसा नही कहेंगे। उनको तो देवता कहा जाता है। तो इस मेले मे ड्रामा अनुसार तुम आये हो। यह ड्रामा है नूंध है। धीरे-2 वृधी होती जावेगी। तुम्हारा जो कुछ पार्ट चल रहा है वो फिर कल्प बाद भी चलेगा। यह चक्र फिरता रहता है। फिर रावण राज्य, आसुरी पालना होगी। तुम अभी ईश्वरिय बच्चे हो फिर दैवी बच्चे फिर क्षत्री.... बनेंगे। तुम जो अपवत्र प्रवृती वाले बन गये थे वो ही फिर पवित्र प्रवृती वाले बनते हो। है तो यह भी दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं। बाकी इतनी भुजाये आदि होती नही है। प्रवृती मार्ग की चार भुजाये दिखाई गई है। दो पुरुष की, दो स्त्री की। बाकी वैसे चार भुजाओं वाला कोई होता नही है। विष्णु के लिये समझते है कि वो सूक्ष्म वतन मे रहने वाला है। चार भुजा क्यों है इसका अर्थ क्या है यह कोई भी नही जानते है। यह चित्र खडा है ऐम आब्जेक्ट। विष्णु पुरी मे ऐसे प्रवृती मार्ग वाले रहते है। भक्ति मार्ग मे तो बहुत भुजाये आदि दे दी है। विष्णु कौन है यह कोई बता नही सकते। महालक्ष्मी की भी पुजा करते है। जगतअम्बा से कब धन नही मांगते है। लक्ष्मी से ही धन मांगते है। धन जास्ती मिल गया तो कहेंगे कि लक्ष्मी की पुजा जास्ती की इसलिये ही उसने हमारा भण्डारा भर दिया है। यहां तो तुम जगतअम्बा से वर्सा पा रहे हो परमपिता परमात्मा शिव दवारा। देने वाला तो वो है नां। जगतअम्बा का कितना बडा मेला लगता है। ब्रहमा को इतना नही लगता। ब्रहमा को तो एक ही जगह बिठा दिया है। अजमेर मे बडा मन्दिर है। देवियों के भी मन्दिर बहुत है। क्योंकि इस समय की है तुम्हारी महिमा है। तुम भारत की सेवा करती हो। पुजा भी तुम्हारी जास्ती होती है। तुम लक्की हो। जगतअम्बा के लिये ऐसे कभी नही कहते है कि वो सर्वव्यापी है। कुत्ते बिल्ले कण-2 मे है। और तुम्हारा बाप जो तुमको पावन बनाते है उनको गाली मिलती है। तुम्हारी महिमा होती रहती है। ब्र, वि, श को भी सर्वव्यापी नही कहते है। मुझे कह देते है ठिक्कर भित्तर-2 कण-2 मे है। कितनी ग्लानी करते है। मै तुम्हारी कितनी महिमा बढाता हूं। भारत माता की जय कहते है नां। भारत माता तो हो नां। धरती को माता नही कहते। धरती तो अभी तमोप्रधान है वो ही फिर सतुयुग मे सतोप्रधान हो जाती है। इसलिये ही कहते है कि देवताओं के पैरपतित दुनियां मे नही आते है। जब सतोप्रधान नई दुनियां होती है तब आते है। अभी तुमको सतोप्रधान बनना ही है। श्रीमत पर चलते-2 बाप को याद करते रहेंगे। तो उंच पद पावेंगे। यह खयाल रख कर याद करना है कि याद करेंगे तो ही विकर्म विनाश होंगे। श्री मत मिलती ही रहती है। सतयुग मे तुम्हारी आत्मा प्योअर कंचन बन जाती है। शरीर भी कंचन मिलता है। सोने मे खाद पडती है तो फिर जेवर भी वैसा ही बनता है। आत्मा झूठी तो शरीर भी झूठा। खाद पडने पर सोने का मूल्य भी कम हो जाता है। तुम्हारा मूल्य तो अब कथ भी नही सकते है। पहले तो तुम विश्व के मालिक 24कैरट थे। अभी 9कैरट कहेंगे। तुम्हारा मूल्य देखो कैसा है? कौडी मिसल। यह तो बाप बच्चों से सह हिसाब करते है। बच्चो को बहलाते रहते है जो कि सुनते-2 तुम बदलते जाते हो। मनुष्य से देवता बन जाते हो। प्योअर आत्मा है तो शरीर भी प्योअर मिलेगा। हीरे जवाहरो के महल होंगे। स्वर्ग है तो बाकी फिर क्या। जब ऐसी दुनियां मे जाना है तो बाप को ही याद करो। अच्छा मीठे-2 बच्चो को मात-पिता वा बाप दादा का दिल वा जान सिक वा प्रेम से याद-प्यार और गुड मार्निंग